(Call Number)

पुस्तकालय में संग्रहीत प्रत्येक ग्रन्थ को विशिष्टता प्रदान करने के लिए क्रामक संख्या का प्रयोग किया जाता है। क्रामक संख्या के अनुप्रयोग से "एक ग्रन्थ, एक व्यक्तिगत संख्या" के सिद्धान्त का पालन होता है। डॉ० रंगनाथन ने क्रामक संख्या के परिभाषाबद्ध करते हुए कहा है कि

पुस्तकालय में एक प्रलेख की अन्य प्रलेखों के मध्य तथा सूची में प्रविष्टि की स्थिति को सापेक्षिक स्थिति में प्रदर्शित करने वाली संख्या को क्रामक संख्या कहते हैं।

मेलविल ड्यूवी ने क्रामक संख्या के सन्दर्भ में कहा है कि

"ग्रन्थ की क्रामक संख्या सामान्यतया वर्गांक तथा ग्रन्थांक दोनों के समायोजन से बनती है। तथापि मेलविल ड्यूवी भी अपनी वर्गीकरण पद्धति में ग्रन्थ संख्या निर्मित करने की किसी विधि का उल्लेख नहीं किया है।"

रंगनाथन ने प्रत्येक ग्रन्थ को एक निश्चित स्थान प्रदान करने तथा अन्य ग्रन्थों में उसकी पहचान सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से प्रत्येक ग्रन्थ को उसका नाम प्रदान करने की प्रक्रिया सुनिश्चित की है। इसीलिए कोलन क्लासीफिकेशन में किसी भी

रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित इस प्रक्रिया के आधार पर एक ग्रन्थ की क्रामक संख्या निर्मित करने के लिए एक ग्रन्थ की तीन आधारभूत विशेषयों का प्रयोग करना आवश्यक है, अर्थात् वर्गांक ग्रथांक संग्रहांक |

रंगनाथन के अनुसार पुस्तकालय वर्गीकरण एक पुस्तक के विशिष्ट विषय के नाम को क्रमसूचक अंकों की अधिमान्य कृत्रिम भाषा में अनुवाद करना तथा अनेक पुस्तकें जो एक ही विशिष्ट विषय से सम्बन्धित हैं उनको उनकी विषयवस्तु के अतिरिक्त अन्य विशेषताओं के आधार पर दूसरे प्रकार के क्रमसूचक अंकों द्वारा वैयक्तिकता प्रदान करना है।

क्रामक संख्या की उपयोगिता :-

1. पुस्तकालय में संग्रहित ग्रन्थों में से किसी इच्छित ग्रन्थ को पाठक के द्वारा मांगने पर उसे अविलम्ब प्राप्त किया जा सकता है।

2. पाठक द्वारा किसी ग्रन्थ को उपयोग के पश्चात् लौटाने पर उसे पुनः निर्धारित स्थान पर रखा जा सकता है।

3. पुस्तकालय द्वारा अधिग्रहीत नवीन ग्रन्थों को उसी विषय से सम्बन्धित अन्य ग्रन्थों के साथ उसके उपयुक्त स्थान पर व्यवस्थित किया जा सकता है।

4. यह पुस्तकालय के ग्रन्थों की वर्गीकृत सूची का आधार होता है।

० रंगनाथन ने ग्रन्थ वर्गीकरण में क्रामक संख्या को तीन भागों में विभाजित किया है, जो निम्न है-

1. वर्गांक (Class - Number) = (Knowledge classification) ज्ञान वर्गीकरण।

2. ग्रन्थांक (Book-Number - (Book Classification) ग्रन्थ वर्गीकरण

3. संग्रहांक (Collection-Number) = (Sequence classification) अनुक्रम वर्गीकरण

(1) वर्गांक (कक्षा संख्या):

ग्रन्थ के क्रामक संख्या का वह भाग जो किसी ग्रन्थ के विषय को कृत्रिम भाषा में व्यक्त करता है, वर्गांक कहलाता है। प्रत्येक प्रकार के पुस्तकालय में संग्रहीत सामग्री को वर्गीकृत अवस्था में व्यवस्थित करने के लिए प्रचलित एवं व्यवहारिक वर्गीकरण पद्धति द्वारा प्रत्येक ग्रन्थ को विषय के अनुसार वर्गांक प्रदान किया जाता है। वर्गीक किसी भी ग्रन्थ के विषय का सांकेतिक चिह्नों/कृत्रिम भाषा में अनुवाद है।

डॉ० रंगनाथन ने वर्गांक को परिभाषाबद्ध करते हुए कहा है कि-

"एक ग्रन्थ का वर्गांक उसके विशिष्ट विषय के नाम का क्रमदर्शक अंकों का कृत्रिम भाषा में अनुवाद है।" इसका यह तात्पर्य है कि किसी ग्रन्थ का वर्गांक बनाने के लिए सर्वप्रथम उस ग्रन्थ के विशिष्ट विषय को सुनिश्चित करना होगा। रंगनाथन के शब्दों में "एक ग्रन्थ का विशिष्ट विषय ज्ञान का वह भाग है जिसका विस्तार एवं गहनता विचार वस्तु के समानान्तर हो।"

(2) ग्रन्थांक (Book Number):

पुस्तकालय में संग्रहीत पाठ्य सामग्री को विशिष्ट स्थान देने तथा प्रत्येक ग्रन्थ को वैयक्तिकता प्रदान करने के लिए उसे वर्गांक प्रदान किया जाता है। लेकिन एक ही विषय पर अनेक लेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों को वर्गांक द्वारा विशिष्टता एवं पृथकत्व प्रदान नहीं किया जा सकता। इस प्रकार समस्या के समाधान के लिए ग्रन्थांक (Book Number) की परिकल्पना की गयी। एक विषय पर समान आख्या वाली पाठ्य सामग्री को ग्रन्थ के आन्तरिक एवं बाह्य स्वरूप यथा -ग्रन्थ का लेखक, संस्करण, प्रकाशन वर्ष भाषा, खण्ड संख्या आदि के आधार पर पृथक-पृथक पहचान प्रदान की जा सकती है|

रंगनाथन ग्रंथांक प्रणाली (Ranganathan Book Number Sys-tem) डॉ० रंगनाथन ने कोलन वर्गीकरण पद्धति में ग्रंथांक निर्मित करने के लिए पक्ष उपसूत्र (Facet Formula) का प्रतिपादन किया है। पक्षसूत्र का उपयोग कर सभी प्रकार के ग्रंथों की विशिष्टता के लिए ग्रंथांक प्रदान किया जा सकता है। ग्रंथांक का यह परिसूत्र कोलन वर्गीकरण पद्धति के अध्याय 02 पृष्ठ सं0 2.3 पर दिया गया है, तथा इस पक्ष उपसूत्र के अनुप्रयोग सम्बन्धी नियम अध्याय 03 पृष्ठ सं0 1.3 पर दिये गये हैं।

कोलन वर्गीकरण पद्धति में ग्रंथांक के निर्माण हेतु निर्मित पक्ष उपसूत्र योजक चिन्हों (Connecting symbols) सहित निम्नवत् हैं।

[एल], [एफ] [वाई] [ए] [वी]-[एस]; [सी]: [ईवीएन]

उपर्युक्त पक्ष परिनियम में प्रयुक्त चिन्ह निम्नलिखित विशेषताओं के लिए प्रयोग किये गये हैं-

L प्रलेख की भाषा (Language)

F प्रलेख किस रूप में प्रकाशित हुआ है (Form)

Y प्रलेख का प्रकाशन वर्ष (Year)

A एक ग्रंथांक प्राप्त भाग (परिग्रहण)

V प्रलेख की खण्ड संख्या (Volume Number)

S प्रलेख के खण्ड का परिशिष्ट अंक (Supplement Number)

C प्रलेख की प्रतियाँ (Copy Number)

E ईवीएन समालोचना

(3) संग्रहांक (Collection number):

पुस्तकालय के विभिन्न प्रकार के संग्रह को इंगित करने के लिए विभिन्न प्रतीकों की सहायता ली जाती है, इसे ही संग्रहांक कहा जाता है।

एक पुस्तकालय अपने संग्रह को पाठकों अथवा अन्य दृष्टिकोण से इस प्रकार से विभाजित करता है कि अन्तर्निहित उद्देश्यों की पूर्ति सरलता से हो सके। विभाजन की प्रक्रिया पुस्तकों के भौतिक स्वरूप जैसे ब्रेल पुस्तकें, माइक्रो कार्ड, पारदर्शी कार्ड, अथवा आकार जैसे-छोटे आकार अथवा बड़े आकार की पुस्तकें अथवा विशिष्ट विषयों के विभाग- जैसे कानून विभाग की पुस्तकें, रसायन शास्त्र विभाग की पुस्तकें, अथवा पाठकों की सुविधा हेतु जैसे पाठ्य पुस्तकें आदि विभिन्न आधार प्रयोग किये जा सकते हैं। यह कार्य पुस्तक का वर्गांक अथवा ग्रन्थांक नहीं कर सकते हैं।

इसलिए संग्रह अंक का प्रयोग किया जाता है। रंगनाथन ने इस हेतु संग्रहांक का उपसूत्र प्रतिपादित किया है जिसके अनुसार 'एक पुस्तक वर्गीकरण पद्धति में विशिष्ट प्रकार के संग्रह को उनके भौतिक स्वरूप अथवा दुर्लभता अथवा पाठक सेवाओं को सुलभ बनाने के लिए वैयक्तिकता प्रदान करने हेतु संग्रहांकों, की अनुसूची का प्रावधान किया जा सकता है तथापि एक पुस्तकालय के संग्रह को किन आधारों पर विभाजित करना है, किस प्रकार के संग्रह के लिए क्या प्रतीक प्रयुक्त करना है, यह सब पुस्तकालय का अनुरक्षण विभाग (Maintenance Department) निश्चित करता है। पुस्तकालय में प्रयोग की जाने वाली वर्गीकरण पद्धति में यदि संग्रहांक के लिए प्रावधान है तो संग्रह अंक उसी पद्धति के आधार पर प्रयुक्त किया जा सकता है।